आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2290 • उदयपुर, गुरुवार 01 अप्रेल, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
दिव्यांगों की सेवा में, आपकी नारायण सेवा

हिंद महासागर की जीनोम मैपिंग में जुटे विज्ञानी

पृथ्वी का 70 फीसद भाग जल से घिरा है और धरती पर पाए जाने वाले जीव–जंतुओं के संसार में 90 फीसद समुद्री जीव शामिल हैं। लेकिन, रहस्य से भरे महासागरों के बारे में जानकारी बहुत ही कम है। बताया जाता है कि 95 फीसद समुद्र एक अबूझ पहेली बना हुआ है। समुद्र अपने गर्भ में दुर्लभ जीव–जंतुओं, बैक्टीरिया और वनस्पतियों का संसार समेटे हुए है। समुद्र में छिपे इन रहस्यों को उजागर करने के लिए विज्ञानी तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) की गोवा स्थित प्रयोगशाला राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एनआइओ) ने हिंद महासागर में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवों की जीनोम मैपिंग के लिए एक अभियान शुरू किया है, जो समुद्री रहस्यों की परतें खोलने में मददगार हो सकता है।

इस अभियान के अंतर्गत हिंद महासागर के विभिन्न हिस्सों में आणविक स्तर पर समुद्र के पारिस्थितिकी तंत्र की आंतरिक कार्यप्रणाली को समझने की कोशिश की जाएगी।

जीनोम के निष्कर्षों के साथ शोधकर्त्ता समुद्री सूक्ष्म जीवों पर जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और पोषक तत्वों की कमी के प्रभाव का आकलन करने का प्रयास करेंगे। इस दौरान हिंद महासागर के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 5000 मीटर की गहराई से नमूने एकत्र किए जाएंगे।

लगभग 10 हजार समुद्री मील की दूरी तय की जाएगी

विशाखापत्तनम बंदरगाह से 14 मार्च को शुरू हुए इस अभियान के अंतर्गत लगभग 10 हजार समुद्री मील की दूरी तय की जाएगी। इस दौरान 90 दिनों तक हिंद महासागर के रहस्यों को उजागर करने के लिए बड़ी मात्रा में नमूनों को इकट्ठा किया जाएगा। सीएसआइआर–एनआइओ के विज्ञानियों की टीम रिसर्च वेसल 'सिंधु साधना' पर सवार होकर हिंद महासागर के रहस्यों की पड़ताल करने निकली है। एनआइओ के 23 विज्ञानियों का दल इस अभियान पर गया है, जिसमें छह महिला विज्ञानी भी शामिल हैं।

महासागर में मौजूद सूक्ष्म जीवों की जैव– रासायनिक प्रतिक्रिया का अध्ययन होगा

सीएसआइआर–एनआइओ के निदेशक ने बताया है कि हिंद महासागर के पारिस्थितिकी तंत्र की गतिशीलता को समझने के लिए आधुनिक आणविक बायोमेडिकल तकनीकों, जीनोम सीक्वेसिंग और बायोटेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाएगा। इस जीनोम मैपिंग के माध्यम से बदलती जलवायु दशाओं को ध्यान में रखते हुए महासागर में मौजूद सूक्ष्म जीवों की जैव–रासायनिक प्रतिक्रिया का अध्ययन भी किया जाएगा।

विज्ञानी समुद्र के विभिन्न हिस्सों में विशिष्ट खनिजों की प्रचुरता और कमी को समझने की कोशिश करेंगे

विज्ञानियों का कहना है कि यह जीनोम सीक्वेंसिंग समुद्री जीवों के आरएनए और डीएनए में परिवर्तन और महासागरीय सूक्ष्मजीवों की मौजूदा स्थिति के लिए जिम्मेदार प्रभावी कारकों की पहचान करने में मददगार हो सकती है। इस अध्ययन में विज्ञानी समुद्र के विभिन्न हिस्सों में विशिष्ट खनिजों की प्रचुरता और कमी को समझने की कोशिश भी करेंगे, जिसका उपयोग महासागरीय पारिस्थितिकी प्रणालियों में सुधार से जुड़ी रणनीतियों में किया जा सकता है।

संस्थान में बनेगा सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट

यूनिट की स्थापना से पूर्व की तैयारियों का संस्थान के सेवा महातीर्थ में 28 फरवरी को रोटरी इंटरनेशनल के डिस्ट्रीक्ट गर्वनर (3054) श्री राजेश जी अग्रवाल ने अवलोकन किया। उनके साथ रोटरी क्लब मेवाड़ के अध्यक्ष सुरेश जी जैन, संरक्षक हंसराज जी चौधरी, सहायक गर्वनर संदीप सिंघटवांड़िया, डॉ. अरूण जी बापना एवं अन्य पदाधिकारी भी थे। संस्थान के आर्थोटिस्ट–प्रोस्थेटिस्ट डॉ. मानस रंजन साहू ने रोटरी दल को फेब्रीकेशन युनिट की तकनीकी जानकारी देते हुए बताया कि इसकी स्थापना से जरूरतमंद दिव्यांगों तक कृत्रिम अंग और अधिक शीघ्रता के साथ निःशुल्क पहुंचाए जा सकेंगे। इससे पूर्व रोटरी गर्वनर एवं दल का स्वागत करते हुए संस्थान की निदेशिका सुश्री पलक दीदी ने कहा कि संस्थान काफी समय से इस युनिट के लिये प्रयासरत था। रोटरी इन्टरनेशनल फाउण्डेशन ने इसे साकार कर अंसख्य दिव्यांगों की जिंदगी में उत्साह का रंग भर दिया है। इससे बड़े पैमाने पर कृत्रिम अंग तैयार हो सकेंगे। संस्थान के विदेश प्रकोष्ठ प्रभारी रविश कावड़िया ने संस्थान की 36 वर्ष की सेवाओं का ब्यौरा देते हुए कोरोना काल में गरीब बेरोजगार व दिव्यांगों को जरूरत की चीजों उनके घर तक पहुंचाने की जानकारी दी। धन्यवाद राकेश जी शर्मा ने ज्ञापित किया।

गर्वनर श्री राजेश जी अग्रवाल ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान अंतर्राष्टीय स्तर पर दिव्यांगों का एक सेवा सहारा है। जहां से उनकी रूकी जिंदगी फिर से गतिमान होती है। यहां कृत्रिम अंग निर्माण के लिए फेब्रीकेशन युनिट स्थापित कर रोटरी फाउण्डेशन को संतोष और खुशीमिलेगी। युनिट डमोरी डयुड हिम (डेकल्ब कंट्री अमेरिका) रोटरी इंटरनेशनल फाउण्डेशन एवं रोटरी क्लब उदयपुर–मेवाड़ के संयुक्त प्रयासों एवं सहयोग से स्थापित होगी।

जिसमें कृत्रिम अंग निर्माण की अत्याधुनिक मशीनें लगेंगी। रोटरी क्लब मेवाड़ के संरक्षक हंसराज जी चौधरी ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान ने उदयपुर को विश्वभर मेंसेवा की दृष्टि से एक नई पहचान दी है। ऐसी संस्था के साथ सहभागी बनना गौरव की बात है।

एक वर्ष की चिकित्सा के बाद चला मोहित

बांका (बिहार) के गांव कर्मा निवासी राजीव कुमार सिंह के घर 26 जुलाई 2018 को दूसरी संतान का जन्म शल्य चिकित्सा से हुआ। जन्म के 6–7 माह बाद माता–पिता को पता लगा कि मोहित के दोनों पांवों में कमजोरी और टेढ़ापन है। यह देख वे चिंताग्रस्त हो गए। तभी उनके किसी मित्र ने बताया कि अपने बच्चें का इलाज उन्होंने भी नारायण सेवा संस्थान में कराया जिससे वो अब आसानी से चलने लगा है। इस जानकारी के बाद मोहित के माता– पिता भी बिना वक्त गंवाए मार्च 2019 में उदयपुर आए।

संस्थान की डॉक्टर्स टीम ने जांच की। बच्चे को जन्मजात क्लब फुट डिफोरमेटी रोग बनाया और कहा कि 2 वर्ष तक इलाज चलेगा। फिर शुरू हुआ इलाज का दौर जिसके तहत 3 बार प्लास्टर चढ़ाया गया। दोनों पांव का एक–एक ऑपरेशन हुआ। उसके बाद 2 बार फिर प्लास्टर चढ़ाए और 3 बार अलग– अलग तरह के जूते पहनाकर उसे चलाया। मोहित के पांव अब सीधे हो गए है। वो दौड़ने भी लगा है। पूरा परिवार उसे चलता देख बहुत खुश है।

प्रभु के हो जाओ

परमात्मा ने जो लिख दिया है वह होकर ही रहता है। जो परमात्मा ने लिख रखा है वही होगा, अपनी तरफ से कुछ भी करने का उपाय नहीं है। कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। जब सब प्रभु के हाथ में है तो चिन्ता किस बात की? फिर बोझ किसका? जब तुम बदलना ही नहीं चाहते कुछ, जब तुम इस प्रभु की रजा में राजी हो, इसकी मर्जी में राजी हो, जब तुम्हारी अपनी कोई मजबूरी नहीं, तब बेचैनी कैसी? तब सब कुछ हल्का हो जाता है। पंख जग जाते हैं, तुम उड़ सकते हो इस विशाल आकाश में, इस बेअंत निरंकार में।

एक ही विधि है, परमात्मा की मर्जी, यह जैसा करवाए, यह जैसा रखे वैसा रहें। एक नवाब ने एक गुलाम खरीदा। गुलाम स्वस्थ और सजग था। नवाब उसे घर लाया। उसने गुलाम से पूछा कि तू कैसे रहना पसंद करेगा? गुलाम ने मुसकरा कर कहा, मालिक की जो मर्जी। आप जैसा रखेंगे वैसा रहूंगा। नवाब ने पूछा, "तू क्या पहनना, क्या क्या खाना पसंद करता है?" उसने कहा,"मेरी क्या पंसद? मालिक जैसा पहनाए, पहनूंगा। मालिक जो खिलाए, खाउंगा।" नवाब ने पूछा तेरा नाम क्या है? हम क्या नाम लेकर तुझे पुकारें? उसने कहा, मालिक की जो मर्जी। मेरा क्या नाम? दास का कोई नाम होता है? जो नाम आप दे दें वही मेरा नाम है।"

नवाब के जीवन में क्रांति घट गई। उसने गुलाम से कहा कि तूने मुझे राज बता दिया, जिसकी मैं तलाश में था। अब यही मेरा और मेरे मालिक का नाता। नवाब का मन शांत हो गया। जो बहुत दिनों के ध्यान से नहीं हुआ था, जो बहुत दिन नमाज पढ़ने से नहीं हुआ था, वह इस गुलाम के सूत्र से मिल गया।

हुकुम रजाई चलणा/नानक लिखिआ नालि।

सोचो, थोड़ा होश करो। जैसा रखे, रहो। अपनी तरफ से तो बहुत कोशिश करके भी देख ली, क्या हुआ? तुम वैसे के वैसे हो। जैसा उसने भेजा था उससे विकृत भले हो गए हो, उससे अच्छे नहीं हुए हो। जैसे बचपन में थे भोले-भाले, उतना भी नहीं बचा हाथ में। जीवन की किताब पर क्या-क्या नहीं लिख डाला पर पाया कुछ नहीं। सिवाय दुःख, तनाव, संताप के क्या तुम्हारे हाथ लगा है? थोड़े दिन प्रभु की सुन कर प्रभु पर छोड़ें, फिर देखें जीवन कैसे आनन्द से भर उठता है।

मांगते क्या हैं ?

एक बार गौतम बुद्ध से एक व्यक्ति ने पूछा कि भगवान् आप दिन-रात हजारों लोगों को उपदेश देते रहते हैं पर जिज्ञासा वश पूछना चाहता हूँ कि आप के प्रवचनों से कितने लोग मुक्ति को उपलब्ध हुए हैं तो बुद्ध ने कहा कि तुम्हारे इस प्रश्न का जवाब अवश्य दूंगा पर तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। एक डायरी और पेन लेकर गाँव में जाओ और प्रत्येक व्यक्ति से उसकी एक इच्छा पूछो और उसे लिखकर ले आओ। वह व्यक्ति गाँव में गया और एक-एक व्यक्ति से उसकी इच्छा पूछकर उसे लिखने लगा।

किसी ने पुत्र-प्राप्ति की इच्छा तो किसी ने उत्तम स्वास्थ्य की, किसी ने धन-संपत्ति की तो किसी ने ऊँचे पदों की इच्छाएं जताई। शाम तक वो युवक सभी की इच्छाएं पूछकर बुद्ध के पास आया और बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा।

बुद्ध ने कहा कि देखा तुमने! तुमने इतने लोगों से उनकी एक-एक इच्छा पूछी हैं पर किसी नें भी मोक्ष की, ध्यान की या परमात्मा की इच्छा नहीं जताई। स्वयं भगवान् भी आकर यदि लोगों से कुछ मांगने को कहें तो भी लोग परमात्मा से परमात्मा नहीं, बल्कि संसार ही मांगेंगे।

जन्म से ही दिव्यांग विनोद चलने लगा

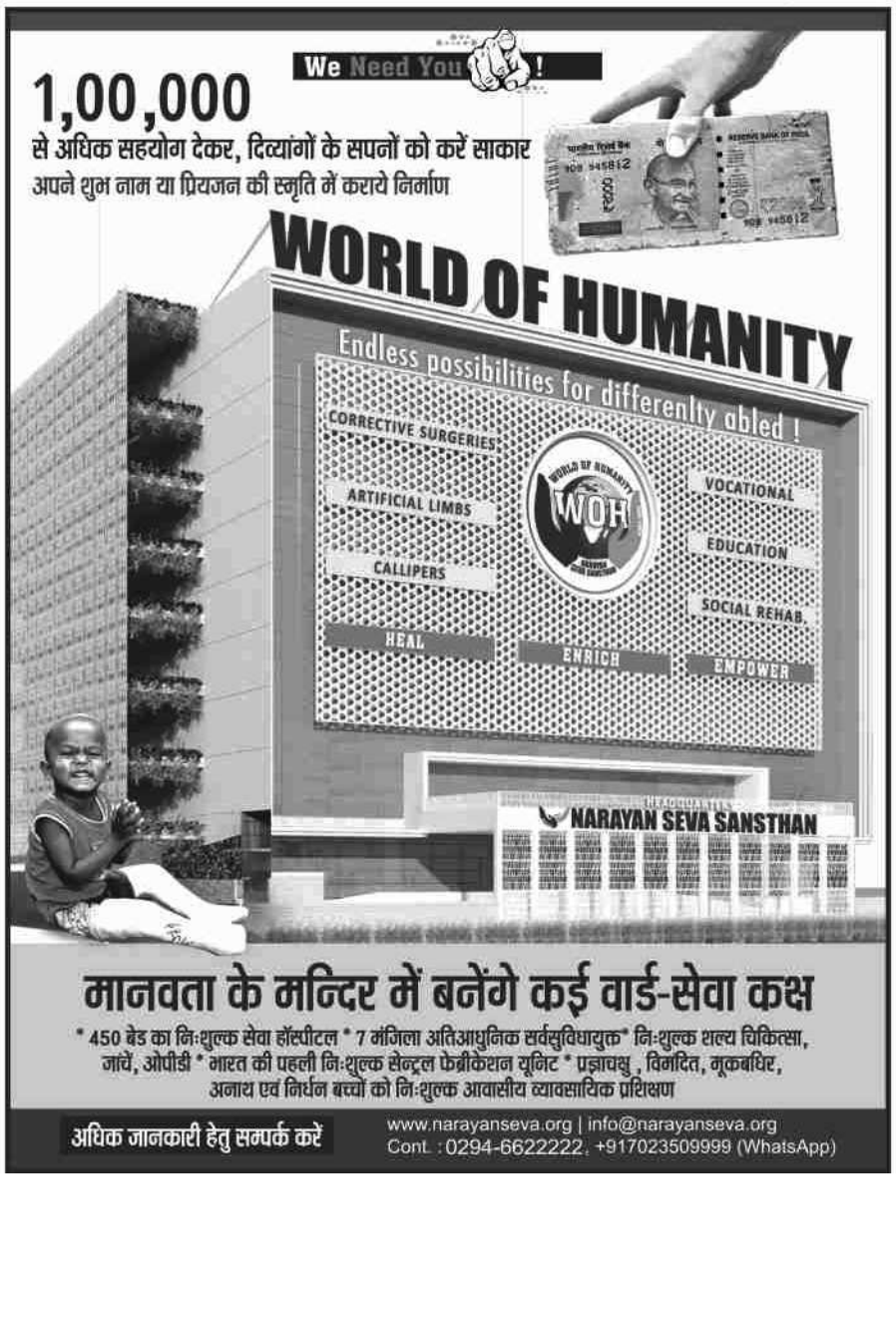

विनोद सराठे (27 वर्ष) पिता-श्री पुरुषोत्तमदास जी, शहर, पिपरिया, जिला हौशंगाबाद (म.प्र.) 27 वर्षों से लकड़ी के सहारे चलने वाले विनोद का जीवन निराशामय था।

इलाज के लिए विनोद को कई बड़े शहरों में दिखाया गया, लेकिन पांव से विकलांग विनोद की हालत दिन-दिन बिगड़ती ही गई। इसी बीच टी.वी.पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर विनोद के हृदय में आशा की किरण जगी और वह अपनी पत्नी के साथ उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान पहुँचा।

जांच के बाद विनोद के घुटने का निःशुल्क ऑपरेशन हुआ। 27 वर्षों से लकड़ी के सहारे चलने वाले विनोद की लाठी अब छूट चुकी थी और कैलिपर पहनकर आसानी से चलने लगा है। इसे अपने जीवन की नई शुरूआत मानता है।

सम्पादकीय

सेवा, साधना है। यह साध्य तक पहुँचने का सर्वसुलभ मार्ग है। यों तो साध्य तक जाने के लिए अनुभवियों व विद्वानों ने अनेक साधन सुझाए हैं। अनेक ने उनका प्रयोग करके सिद्धियां भी पाई हैं। पर सेवारूपी साधन तो सर्वसुलभ है। हमारे चारों ओर ऐसे मानव एवं प्राणी हैं जिन्हें तत्काल सेवा की आवश्यकता है। यह जरूरी नहीं है कि हम कोई बड़ी सेवा करें, बड़ी राशि खर्च करें तभी सेवा होगी। छोटी–बड़ी सेवा यह तो भावात्मक भेद है। गुणात्मकता ये तो प्रत्येक सेवा का एक सा महत्व है। हमारे पास यदि धन है तो धन लगाकर, धन नहीं है तो समय लगाकर, धन और समय दोनों नहीं है तो सेवा कार्य को सराहकर भी सेवा–पथिक बना जा सकता है। यदि किसी के पास ये तीनों ही साधन हैं तो फिर तो क्या कहना? सेवा कैसी भी हो, कहीं भी हो, कितनी भी हो तथा कभी भी हो, सब परमात्मा की दृष्टि में रहती है। यह ईश्वरीय कार्य में मानव का सहयोग ही है तथा मानव जीवन को सफल करने का मंत्र भी है।

कुछ काव्यमय

दीनदुखी कैसे सुखी,
बनें यही हो चाह।
करुणा नैनों में भरे,
ऐसी बने निगाह।।
देख किसी की पीर को,
मन व्याकुल हो जाय।
ताप मिटे जब दीन का,
मन शीतल हो पाय।।
हाथ उठे सेवा करे,
तो पावनता छाय।
दीनदुखी के स्पर्श से,
कर पावन हो जाय।।
कदम बने सेवा पथिक,
बढ़े लक्ष्य की ओर।
बंधे दीनदयाल से,
मेरी जीवन डोर।।
मैं सोचूं ऐसा सदा,
सेवा मेरा काम।
तब ईश्वर के प्रेम से,
बन पाऊँ निष्काम।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

निर्माणाधीन 'डब्लूओएच' में करें सहयोग

1. डायग्नोसिस, सर्जरी, कृत्रिम लिम्ब, आईसीयु, पोस्ट ओपीडी, देखभाल एवं दवाइयां
2. दिव्यांग के लिए रोजगार प्रशिक्षण अकादमी
3. दिव्यांगों के लिए कला अकादमी।
4. भोजन सेवा।
5. दिव्यांगों, मरीजों के लिए आवास एवं भोजन कक्ष।
6. मरीजों एवं परिचारकों के लिए आवास।
7. मंथन एवं चितन/गुरूदेव विंग।
8. अतिथियों के लिए आवास और आतिथ्य ।
9. दान प्रबंधन और प्रशासन विंग।

अपनों से अपनी बात

बुरा वक्त, मैत्री की कसौटी

एक राजा को उसी राज्य के एक सज्जन व्यक्ति से मित्रता थी। दोनों एक दिन टलते हुए जंगल की तरफ निकल गये। राजा ने एक फल तौड़ उसके छः टूकडे किये।

एक टुक्ड़ा अपने मित्र को दिया। मित्र ने उसे खाकर और मांगा। राजा ने दे दिया। जब तीसरा मांगा तो राजा ने थोड़ा सकुचाते हुए वह भी दे दिया। मित्र ने जब शेष टुकड़े भी मांगे तो राजा ने मन मारकर उसे दो और टुकड़े दे दिये। मित्र ने वे टुकड़े भी बड़े चाव से खा गया। और छठे की मांग कर दी।

इस पर राजा मन ही मन क्रुद्ध हो गया कि कैसा मित्र है। पूरा फल स्वयं खाना चाहता है। तब राजा ने कहा यह टुकड़ा तो मैं ही खाऊँगा। तुम्हे नहीं दूंगा। ऐसा कहने के उपरांत राजा ने वह टुकड़ा मुंह में डाला औश्र चाबते ही झट से थूं क दिया। क्योंकि वह बहुत ही कड़वा था। राजा ने कहा हे मित्र! तुमने कड़वे फल के पांच टुकडे बिना शिकायत ही खा लिये। मैं तो मन में यह सोच रहा था। कि फल बहुत मीठा होगा और तुम पूरा फल खाना चाह रहे हो परंतु जब मैने खाया तब पता चला कि तुम मुझे कड़वा फल नही खाने देना चाहते थे। फल के इस कड़वे स्वाद के कारण तुमने यह सब किया। तुमने यह क्यों नहीं बताया कि यह फल इतना कड़वा है। इस पर मित्र ने उतर दिया राजन् आपने मुझे कई बार मीठे फल खिलाए। एक बार अगर कड़वा फल आ गया तो मै कड़वा कहूँगा क्या? आपने मुझ पर अनगिनत उपकार किये है। अगर एक बार कष्ट आ गया तो क्या वह कष्ट मैं आपको बताऊँगा? राजा मित्र की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे गले लगा लिया। एक मित्र को दूसरे मित्र के सुख–दुःख में बराबर की भागीदार होना चाहिए। मित्रता भेदभाव नहीं करती है। सच्चा मित्र वहीं है जो कठिन से कठिन हालत में भी साथ खड़ा रहे।

– कैलाश 'मानव'

तूफान का सामना

लड़की कार चला रही थी। पास वाली सीट पर पिता बैठे थे। कुछ आगे तेज़ तूफान दिखाई देने लगा। लड़की पिता से बोली–कार रोक दूँ?

पिता ने उत्तर दिया–नहीं, कार मत रोको। चलती चलो। कुछ आगे जाने पर तूफान का वेग और तेज हो गया। लड़की कार पर सही नियंत्रण नहीं रख पा रही थी। उसने पिता से पुनः पूछा– अब तो कार रोक दूँ?

उसने देखा कुछ कारे वहीं सड़क के किनारे पर खड़ी थी और उनके चालक तूफान के गुजरने के इंतजार में थे। बहुत मुश्किल से वह स्टेयरिंग पर नियंत्रण रखती हुई, पिता की आज्ञानुसार लगातार कार चलाती रही और 2–3 किमी आगे जाने के बाद पिता से पूछ बैठी– आपने उस समय रूकने के लिए क्यों नहीं कहा जब मैं तूफान में बड़ी मुश्किल से कार चला पा रही थी और अब आप रूकने के लिए कह रहे हैं, जबकि तूफान गुजर चुका है।

इस पर पिता ने कहा–जरा पीछे मुड़कर देखो। लड़की ने देखा तो पाया कि पीछे तूफान का वेग बढ़ गया है जबकि वह तूफान को पार कर के आगे निकल चुके है। पिता ने बेटी को समझाया– परिथितियां बेहतर होने की प्रतीक्षा में लोग जीवनभर वहीं रह जाते हैं जब जो लोग तूफान के बीच में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं, वे ही सफल होते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

मित्रो! सतत् रूप से किये गए छोटे –छोटे प्रयायों से बड़े से बड़ा लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है।

खरगोश के समान तेज भागकर विश्राम करने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती बल्कि कछुए के समान बिना रूके लगातार चलते रहने से ही लक्ष्य हासिल होगा।

राह में बाधाएँ कितनी ही क्यों न आएं परंतु प्रयास सदैव अनवरत् होने चाहिए। चरेवैति। चरेवैति।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

2005 में कम्प्यूटर प्रशिक्षण शुरू किया। कैलाश की मान्यता थी कि जमाने की धार के साथ चलना जरूरी है। बांसवाड़ा में रहते हुए उसने कम्प्यूटर चलाना कुछ कुछ सीख लिया था। उदयपुर में जब पहला कम्प्यूटर खरीदा तो उसने भी मन लगाकर अच्छी तरह सीख लिया। वह चाहता था कि किसी से भी कम्प्यूटर का काम करवाया जाये तो उसका न्यूनतम ज्ञान उसे स्वयं भी होना चाहिये। कम्प्यूटर कक्षाए अत्यन्त सफल रहीं। इस कार्य में प्रशान्त का सक्रिय सहयोग रहा। कई रोगियों के एक पैर का ऑपरेशन हो जाता, मगर दूसरे पैर के ऑपरेशन मे 40 दिन का अन्तराल होता। इस अवधि में उस रोगी को कम्प्यूटर का प्रशिक्षण मिल जाता तो उसके लिये बहुत लाभकारी होता। 40 दिन उसे यहीं रहना होता था, घर तो वापस नहीं जा सकता था। इसी तरह टी. वी. तथा वी.सी.आर. ठीक करने का कार्य भी सिखाना शुरू कर दिया। यह ऐसे जनोपयोगी कार्य थे जिन्हें सीख कर कोई भी, कहीं भी कमा–खा सकता था। रोगियों के लिये विशेष तरह का फर्नीचर बनवा लिया जिससे वह अपना प्लास्टर में बंधा एक पांव आराम से रख कर ये विधाएं सीख सकता था। उन दिनों मोबाइल फोनों का चलन भी बढ़ता जा रहा था, किसी ने सलाह दी कि इसका भी प्रशिक्षण शुरू कर दो तो मोबाइल फोन ठीक करना भी सिखाने लगे।

जयपुर के एक जैन परिवार ने संस्था को एक लाख रुपये दान दिये थे। यह परिवार वर्तमान में बेंकोक शहर में रहता है। इनके 15 साल बाद पहली संतान हुई तो समारोह का अयोजन किया, कैलाश को भी बुलाया। इसी बहाने उसका थाईलेण्ड घूमना हो गया। वहां हिन्दू संस्कृति का प्रभाव तथा उत्कृष्ट बौद्ध मंदिरों तथा गौतम बुद्ध की विशाल प्रतिमाएं देख कैलाश भाव विभोर हो गया। एक बौद्ध मठ में उसने आधा आधा किलो वजनी मणियों की माला देखी। माला बहुत लम्बी थी जो पैरों तक जाती थी। इसका वजन ही 20–25 किलो से कम नहीं होगा। वह इस माला को देखकर चकित रह गया।

अंश-219

जीरा, सौंफ और अजवायन की गोलियां करती है। कीड़ों से बचाव

- बच्चों के पेट में कीड़े होने से पाचन संबंधी परेशानी हो सकती है। भूख न लगना, जी मिचलना, उल्टी आदि लक्षण दिखते हैं। कीड़ों से बचाव में घरेलू उपाय भी कारगर है।
- एक – एक चम्मच जीरा और आधा हिस्सा अजवायन को हींग के साथ घी में भून लें और गुड़ के साथ गोलियां बना लें । बच्चा छोटा है तो 2–3 गोलियां और बड़ा है। तो 5–6 गोलियां सुबह–शाम को दें।
- अमलताश के फल का गुदा निकालकर दूध के साथ उबाल लें। इसे कुछ दिनों तक रोज दें।
- अमलताश के फल को सुखाकर सेंधा नमक –गुड़ के साथ गोलियां बनाकर दें।
- रात को सोने से पहले 10 ग्राम कलौंजी को पीसकर 3 चम्मच शहद के साथ देने से भी फायदा होता है।

पहली बार देखी दुनिया

शहर के सेवा कार्यों में अग्रणी रही नारायण सेवा संस्थान द्वारा सेवा कार्यों के तहत नेत्रहीन बच्चों को ज्योति दिलाने की अनूठी पहल कामयाब हुई।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि संस्थान के सहयोग से चेन्नई स्थित राजन आई केयर हॉस्पीटल पर निःशुल्क नेत्र चिकित्सा एवं चक्षु प्रत्यारोपण के अन्तर्गत जन्म से अंधता के शिकार संस्थान के आवासीय विद्यालय के छात्र राजस्थान के सिरोही जिले के आबूरोड़ निवासी शैतान सिंह गरासिया की दोनों आँखों का चिकित्सकीय परीक्षण कर सफलता पूर्वक ऑपरेशन कर उसकी आँखों को नई रोशनी दी गई। चक्षु प्रत्यारोपण का यह सफल ऑपरेशन नेत्र विशेषज्ञ डॉ. एस. के. राय एवं उनकी टीम ने किया।

ऑपरेशन से पूर्व संस्थान के संस्थापक डॉ.कैलाश 'मानव' ने आवासीय विद्यालय के सभी नेत्रहीन बच्चों का चिकित्सकीय परीक्षण करवाया था, जिसके अन्तर्गत शैतान सिंह को आवासीय विद्यालय के प्रभारी मुकेश शर्मा के नेतृत्व में चेन्नई भेजा।

इस अवसर पर संस्थान की निदेशक श्रीमती वन्दना अग्रवाल ने शैतान सिंह के ठीक होकर पुनः संस्थान आने पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए सम्पूर्ण संस्थान में मिठाई बँटवाई एवं आवासीय विद्यालय के सभी बच्चों को मीठा भोजन कराया।

माता–पिता हुए भावविभोर–शैतान सिंह की नेत्रज्योति के आने पर उसके माता–पिता ने भावविभोर होते हुए कहा कि नारायण सेवा संस्थान ने उनके बच्चे को नई जिन्दगी दी है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
| 2021 महाकुम्भ हरिद्वार

21 दिवस करवाएं संत भोजन सेवा | 5 ऑपरेशन का करें सहयोग | 5 कृत्रिम अंगों का करें सहयोग

सहयोग राशि ₹100000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number :31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Paytm | UPI yono SBI | SBI Payments
UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI

+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

अनुभव अमृतम्

उन्होंने ये ही कहा– बालवी साहब को कि मैं कर्जदार हूँ सेठजी को मना नहीं कर पाया। अपने बिसलपुर में गरीबों के लिए कुछ सेवा की है। डॉ. साहब आपके घर पर कोई आता तो आप 1 रुपया फीस लेते। गरीब आदमी जिनके पास 1 रुपया फीस नहीं है, तो वो क्या करेगा? तो डॉ. साहब हँस दिये। बोले घोड़ा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या? मेरा तो धन्धा ही ये ही है। काम ही ये ही है। मैं यदि 1 रुपया फीस ना लूं तो मेरा घर का खर्चा कैसे चले? राजमल जी ने कहा डॉ. साहब ऐसा करते हैं मैं महीने दो महीने में कुछ पैसे भेजता हूँ। आपको कुछ दवाइयाँ देता हूँ। आपको इतना हर महीने देंगे। एक छोटा सा हॉस्पीटल खोल लेते हैं। भैरव फ्री हॉस्पीटल। ये फ्री का कॉन्सेप्ट। मानव नारायण सेवा खुल गई फ्री का कॉन्सेप्ट। राजमल जी भाईसाहब से मिला। महापुरुष से मिला बात समाप्त हो गई। गाड़ी आगे बढ़ चली बाद में तो उस मन्दिर में मैं भी भाईसाहब के साथ गया था। लेकिन ये बात पहले की जब मैं नहीं था। मेरी मुलाकात नहीं हुई तब की है, और डॉ. साहब ने सोचा एक भावुक व्यक्ति मिला है, भावनाशील मिला है। वैराग्य की तरह होगा। भिवण्डी जायेगा, बोम्बे जायेगा फिर भूल जायेगा, पर उनको चैन कहाँ? राजमल जी साहब तो लगन वाले, करना है तो करना ही है। जो करने योग्य काम है, उसको कर लो, और जो निरर्थक कार्य है उसका त्याग कर दो। ताकि आपके दिमाग में बार–बार घूमें नहीं। दिमाग में उतनी ही चीज घूमनी चाहिए जो करने योग्य है। 15 दिन के अन्दर रुपया भेज दिया, दवाइयाँ भेज दी, जगह देख ली। भैरव फ्री हॉस्पीटल का एक बोर्ड लगा दिया। ऐसे भैरव फ्री हॉस्पीटल चालू हो गया। ऐसा डॉ. साहब ने मुझे कहा था।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 99 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023